L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A - PART - II
PAPER - IV
PSYCHOLOGY (HONOURS)
TOPIC - Gestalt psychology
क्षेत्र बल: (Field forces)

Dr. PRAMOD KUMAR SAHU
Assistant professor,
Guest Teacher,
V.S.J. College, RAJNAGAR
MADHUBANI (BIHAR)
pramodkumar.pbg2018
@gmail.com.

गेस्टाल्टवादियों ने प्रत्यक्षण (perception) की व्याख्या दैहिक (Physiological) एवं तंत्रिका-जन्य कारकों के रूप में किया है, तथा इसके लिए उपयुक्त प्रयोगात्मक पद्धति को प्रदान किये है।

क्षेत्र बल -(Field forces) गेस्टाल्टवादियों ने मस्तिष्क क्षेत्र में दो प्रकार के बलों (Forces) की कल्पना की जो विरुद्ध कार्यवाहियों से मस्तिष्क क्षेत्र की कुछ भाग आकृति के रूप में तथा बाकी भाग पृष्ठभूमि के रूप में दिखलाई देती है वे दोनों बल हैं। संसंजक बल तथा अवरोधक बल मस्तिष्क क्षेत्र में उपस्थित उद्दीपक के प्रभाव के फलस्वरूप इन दोनों तरह के बलों की उत्पत्ति होती है। जैसे अनेक उद्दीपकों में से कुछ उद्दीपक एक दूसरे के समान होते हैं तथा कुछ उद्दीपक एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न होते हैं। सभी समान उद्दीपक एक दूसरे के प्रति आकर्षित होते हैं, और उनमें मिल जाने की प्रवृत्ति होती है। इस तरह की प्रवृत्ति को संसंजक बल कहा गया है। इस तरह से संसंजक बल की कार्य समान उद्दीपक को आपस में मिलाना होता है, ताकि उद्दीपक अधिक से अधिक संगठित रूप से दिखाई दे सके। जैसे हम किसी वस्तु का प्रत्यक्षण करते हैं तो वस्तु का कुछ भाग आकृति के रूप में इसी संसंजक बल के कारण दिखलाई पड़ता है।

मस्तिष्क क्षेत्र में उपस्थित अनेकों उद्दीपकों में से कुछ उद्दीपक ऐसे

II

का होते हैं और लेन देन भी निश्चित होते हैं। इस प्रकार स्वामित्व से प्रबन्धकीय वर्ग उत्पन्न होता है। जिसका मुख्य कार्य उद्योगपतियों को अधिकतम लाभ प्रदान करना होता है। परन्तु प्रबन्ध वर्ग तो केवल एक निश्चित वेतन का भुगतान पाते हैं। तो पूंजीपति वर्ग तथा प्रबन्धकीय वर्ग दोनों हित विरोधाभासी होते हैं। आधुनिक समय, आर्थिक, पूंजीपतियों के प्रभाव को भी, जब कभी उद्योग क्षेत्र के कुछ भाग या हिस्सों को आधार के रूप में देखते हैं। इससे मतलब यह हुआ कि उद्योग के एक भाग या हिस्से में पूंजीपति वर्ग कार्य कर रहा है। कुछ भाग या हिस्से को प्रबन्धकों के रूप में देखते हैं। जिससे मतलब यह हुआ कि उद्योग के एक भाग या हिस्से में प्रबन्धकीय वर्ग कार्य कर रहा है। इस प्रबन्धकीय वर्ग के कारण उद्योग की कुछ भागों अधिकतम लाभ कमाना, अधिक विस्तार करना जिससे प्रबन्धकों की नियुक्ति होती है। बीसवीं 1930 के पश्चात प्रबन्धन में दोनों वर्गों अर्थात पूंजीपति वर्ग तथा प्रबन्धकीय वर्ग की रहनी आवश्यक है। गोल्ड शेयर के विक्रय भाग निकाल कर, उद्योग क्षेत्र या रचना क्षेत्र में सिर्फ पूंजीपति वर्ग ही काम कर रहा है। तो ऐसी परिस्थिति में जब उद्योग अपना-अपना व्यापार अधिकतम लाभ तक सीमित जायेंगे कि उनकी अलग प्रबन्धन व्यवस्था नहीं है। उसी तरह से जब उद्योग क्षेत्र में सिर्फ प्रबन्धकीय वर्ग ही काम कर रहा है। तो ऐसी परिस्थिति में उद्योगों के प्रबन्ध भाग एक दूसरे से लगभग अलग हो जायेगा कि ये वास्तव में निरर्थक हो जायेंगे - और उनकी अलग प्रबन्धन व्यवस्था खत्म हो जायेगी। पूंजीपति तथा प्रबन्धकीय वर्गों-

उद्योग क्षेत्र पर

जब अधिक अपना संगठनता होती है तो निम्नलिखित चार नियमों द्वारा निर्धारित होती है।

(i) यदि उद्दीपकों के बीच गुणात्मक समानता अधिक होती है, तो उसके संगठित होने की संभावना भी अधिक होती है। किताब के किसी पेज पर यदि एक शब्द काली रोशनाई से बाकी छपा है और यदि शब्द उसके बीच अन्य लाल शब्दों के समान काली रोशनाई से छपा है तो हम लाल रोशनाई वाले शब्द को पहले देखते हैं। क्योंकि सभी शब्द के सब अक्षर लगते हैं। उनमें गुणात्मक समानता है।

(ii) यदि उद्दीपकों के बीच तीव्रता की समानता होती है, तो उसके संगठित होने की संभावना ज्यादा अधिक होती है। जैसे सफेद कागज पर एक ऐसे लाल रोशनाई से हम कुछ लिखते जायें कि रोशनाई सूखने के कारण अक्षरों की चमक का रंग तथा कागज का रंग समान हो जाता है तो ऐसी परिस्थिति में लिखे गये वाक्य या शब्द को ठीक ढंग से नहीं पढ़ा जा सकता है। क्योंकि संगठित होने की संभावना दोनों उद्दीपकों की तीव्रता में समानता के कारण काफी अधिक है।

(iii) यदि दो उद्दीपकों के बीच में स्थान की समानता होती है, तो उसके भी संगठित होने अधिक होता है।

(iv) यदि दो उद्दीपकों के बीच में समय की समीपता होती है, एक उद्दीपक के तुरन्त बाद दूसरा उद्दीपक आता है तो उसके भी संगठित होने अधिक होता है।

किसी तीव्र तथा चाल का एक सम्पूर्ण उदाहरण हमें फाई-घटना में पाते हैं। जब कई बत्तियों को एक-दूसरे के समीप स्थिर एक खास समय अन्तराल पर जलाया तथा बुझाया जाता है तो ऐसा लगता है कि एक बत्ती एक जगह से दूसरे जगह एक खास दिशा में घूम रही है।

III

इस उदाहरण में पृथक्करण केवल उद्दीपकों में स्थान की समीपता तथा समता की समीपता दोनों के कारण उत्पन्न हो रहा है।

(i) यद्यपि गेस्टाल्टवादियों ने अपने मत के समर्थन में प्रयोग किया है। किन्तु उनके अधिकतर प्रयोग ऐसे हैं जिनमें मनोवैज्ञानिकों ने विधि से सम्बन्धित कमियाँ युक्त पाया है। जिसके परिणामस्वरूप उनके प्रयोगों से प्राप्त निष्कर्ष अधिक वैज्ञानिक तथा निष्पक्ष नहीं है।

(ii) गेस्टाल्टवादियों ने प्रत्यक्षण में अनुभव के महत्व को स्वीकार नहीं किया है। यह तथ्य कुछ आलोचकों तथा मनोवैज्ञानिकों ने कहा है। इन आलोचकों का कहना है कि प्रत्यक्षण की प्रक्रिया अनुभव या पूर्व अनुभूति के प्रभाव में या सहज नहीं होती बल्कि सीखी हुई रहती है।

(iii) आलोचकों का मत है कि गेस्टाल्टवादियों के प्रत्यक्षीकरण के सिद्धांत मात्र एक वर्णनात्मक है। इन लोगों का कहना है कि निष्कर्ष हेतु जिस तरह की आवश्यकता आवश्यक नहीं होती है। इस तरह ये आलोचक पाते हैं कि किस तरह की सबसे बड़ी परीक्षा है। अतः सिद्धान्त पर प्रत्यक्षीकरण निष्पक्ष रूप समर्थ नहीं है।

(iv) गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों मात्र प्रत्यक्षीकरण संगठनात्मक नियमों मात्र प्रत्यक्षण का वर्णन किया है। परन्तु इसकी व्याख्या नहीं होती है। इस तरह ये समझ पाते हैं कि तरह की संगठन उत्पन्न हो रहा है। परन्तु गेस्टाल्ट वादी यह नहीं बता पाते हैं कि ऐसा संगठन क्यों उत्पन्न हो रहा है।

(v) गेस्टाल्ट सिद्धांत की कमी है कि उद्दीपकों के किन विशेषताओं के कारण प्रत्यक्षीकरण संगठन उत्पन्न होते हैं।

By Poonam Kumari

Date 11/05/2020